Indian Streams Research Journal
Vol -1 , ISSUE –2, March – 2011
ISSN:- 2230-7850
Available online at www.isrj.org

ORIGINAL ARTICLE

21वीं सदी के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

सोनाली निनामा

शोधार्थी , दे.अ.वि.वि., इन्दौर.

प्रस्तावना :

राष्ट्रीय चेतना मूलक बालसाहित्य भावात्मक और वैचारिक, दोनों ही प्रकार का है पर राष्ट्र या राष्ट्रीयता की परिकल्पना बड़ों की देन है जिसका कालान्तर में बालसाहित्य में समावेश हुआ। अब राष्ट्र शब्द का प्रयोग देश के पर्याय के रूप में भी होने लगा है और इस प्रकार राष्ट्र प्रेम या देश प्रेम का एक ही तात्पर्य हो गया है।

राष्ट्र अत्यंत प्राचीन शब्द है, जिसका प्रयोग सर्वप्रथम अथर्ववेद में मिलता है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा गया है – 'राष्ट्रयवर्धय ' अर्थात राष्ट्र के लिए हमारी वृद्धि करे। इसी सूक्त में अन्यत्र कहा गया है – 'सानो भूमिस्त्विाप्र बलं राष्ट्रे दधातूत्तमें' अर्थात वह पृथ्वी हमारे सर्वोत्कृष्ट राष्ट्र में ओज और शक्ति पैदा करे। वैदिक युग का राष्ट्र शब्द एक भावात्मक स्थिति है। देश प्रेम के अर्थ में राष्ट्र का व्यवहार आधुनिक युग में हुआ। आज राष्ट्र अंग्रेजी के नेशन के अर्थ में प्रचलित है। 'नेशन' लैटिन के नैसी शब्द से व्युत्पन्न है, जिसका तात्पर्य है जन्म लेना। जहाँ हम जन्म लेते हैं, वही हमारा नेशन है।[1]

राष्ट्रीयता का मूल आधार उसकी संस्कृति होती है इसलिए अपनी संस्कृति से लगाव अपने सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति चेतना राष्ट्र और राष्ट्रीयता को पुष्ट करती है। यह एक ऐसा भाव है, जिसे सावधानी और धीरज के साथ धीरे–धीरे प्रवाहित करना होता है। राष्ट्रीय चेतना तभी स्थायित्व और पुष्टि प्राप्त कर सकती है, बचपन से ही इस प्रकार की शिक्षा, औपचारिक और अनौपचारिक, दोनों रूपों में मिले। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दल कलाम ने कहा है – ''बच्चे हमारे राष्ट्र की सम्पत्ति होते हैं। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए उनमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करना अनिवार्य है।''[2]

वर्तमान परिवेश में बच्चे विज्ञान की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। वैज्ञानिक ज्ञान रखना बहुत जरूरी है किन्तु अपने राष्ट्र के प्रति जानकारी रखना प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। बच्चों की शिक्षा के प्रारंभ से ही उन्हें राष्ट्र के प्रति जानकारी प्रदान करना बड़ों तथा साहित्यकारों का काम हैं जब बच्चों के मन में राष्ट्रीय चेतना जागृत होगी तो भविष्य में हमारा राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है और विश्व के विकसित देशा में अपना प्रतिष्ठित स्थान बना सकता है। नई सदी में बच्चे पन्द्रह अगस्त और छब्बीस जनवरी को यंत्रवत् 'स्वतंत्रता दिवस' तथा 'गणतंत्र दिवस' जैसे राष्ट्रीय त्योहार तो मनाते हैं परन्तु उनमें भावात्मक राष्ट्रीय चेतना का होना अनिवार्य है।

बलिदानी महापुरूषों की इस धरा पर जन्मा प्रत्येक व्यक्ति इसकी आन–बान–शान पर मर मिटने के लिए तैयार रहता है वहीं बच्चे भी पीछे नहीं रहना चाहते हैं वे स्वयं को भारत की शान मानते हैं और दुश्मन के छक्के छुड़ाने को हमेशा तत्पर रहते हैं –

भारत अपना देश है प्यारा,
हम भारत की शान है।
भले आज हम छोटे कद में,
कल होंगे बलवान।
बालक समझ न दुश्मन ताके,
ले लेंगे हम जान।[3]

राष्ट्रबंधु की 'तन से ज्यादा वतन' शीर्षक कविता में देश को माँ के समान प्यारा, मीठा और सच्चा बताया है –

1. त्रिदिशा – सं. डॉ. मधु पंत, पृष्ठ 76
2. पत्रिका 'बालवाटिका' – सं. भेरूलाल गर्ग, पृष्ठ 27, जनवरी 2010
1. काव्य संग्रह – बच्चों का रसगुल्ला – डॉ. जयसिंह व्यथित, पृष्ठ 72

देश हमारा माँ जैसा ही मीठा है,
इसका अपनापन मेरा तन प्राण है।
इसे अपावन करने वाला दुश्मन है,
उसे झुका देंगे हम इसके चरणों पर।[4]

'हम बच्चे' शीर्षक कविता में बच्चे अपनी शक्ति व हिम्मत का प्रदर्शन इस प्रकार करते हुए दिखाई पड़ते हैं –

हम बच्चे हैं नन्हें–नन्हें,
भारत देश हमारा है।
आँख दिखाएगा जो हमको,
उसको कच्चा खा जाएँगे।
अपनी शान समूचे जग को,
आगे बढ़कर दिखलाएँगे।[5]

संवेगों की श्रृंखला में चेतना का प्रखर स्वरूप ओज और शौर्य है। बालकों में शौर्यभाव प्रेरणा राष्ट्रीयता का पूरक अंग है। प्राणियों में श्रेष्ठ कहलाने वाले मनुष्य को बालपन में ही प्रेरणाओं से प्रतीति होती है। इस संदर्भ में श्री रामगोपाल 'राही' कृत 'बाल शौर्य संदेश' में संग्रहित कविताएँ बालकों में वीरता, शौर्य, राष्ट्रभक्ति के भावों को प्रेरित करती हैं 'नेताजी सुभाष' शीर्षक कविता में कवि कहते हैं –

कुशल संगठनकर्ता वक्ता,
बोलो कौन बिसारे।
वह कहते थे मुझे खून दो,
मैं दूंगा आजादी।[6]

इसी क्रम में 'कल के युवा आज के बच्चे' कविता में बालकों के साथ जननी जन्मभूमि का संबंध स्थापित किया है और बच्चों को भारत की तकदीर के रूप में जोड़ा हैं –

आने वाले कल को समझो,
बच्चे ही तस्वीर है।
कल के युवा, आज के बच्चे,
भारत की तकदीर है।[7]

'जाँबाज' कविता में कवि कहते हैं कि जिनमें देशभक्ति की भावना होती है वही वीर कहलाते हैं वह किसी भी परिस्थिति का सामना करने को सदैव तत्पर रहते हैं –

देशभक्ति का जज्बा जिनमें,
वीर वही होते हैं।
याद हमेशा आते मरकर,
जिंदा वो होते हैं।[8]

कविता की ये पंक्तियाँ बालकों में राष्ट्र के प्रति समर्पण भाव को जागृत करती है उनमें साहस और आत्मविश्वास की भावना जगाती है।

---

2. काव्य संग्रह – शिक्षाप्रद बाल कविताएँ – डॉ. राष्ट्रबंधु, पृष्ठ 44
1. काव्य संग्रह – सचित्र बाल कविताएँ – डॉ. सूरज मृदुल, पृष्ठ 20
2. काव्य संग्रह – बाल शौर्य संदेश – रामगोपाल राही, पृष्ठ 11
3. काव्य संग्रह – बाल शौर्य संदेश – रामगोपाल राही, पृष्ठ 13
1. काव्य संग्रह – बाल शौर्य संदेश – रामगोपाल राही, पृष्ठ 13, 14

श्री सुन्दरलाल अरूणेश की बाल कविताओं में देशभक्ति की भावना प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से बालकों में राष्ट्रीय चेतना का संचार किया है कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं –

जिसको जननी जन्मभूमि से मोह नहीं है प्यार नहीं है।
उसको मानव कहलाने का कोई भी अधिकार नहीं है।
यदि कोई कुविचारी आए, माता को बेड़ी पहनाने।
तनिक नहीं भय खाए, आए आन मान पर दाग लगाने।[9]

डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ने राष्ट्रप्रेम से परिपूर्ण बाल कविताओं का प्रणयन किया है। मातृभूमि का वंदन करते हुए उन्होंने लिखा है –

तेरे गरिमामय मस्तक पर,
हिमगिरिराज मुकुट सा शोभित।
तेरे पद पक्षालन में है,
गंगा यमुना कण्ठहार–सी करती है।
तेरा अभिनंदन,
मातृभूमि तेरा पद वंदन।[10]

रमेशचन्द्र पंत की विभिन्न रचनाओं में देशभक्ति का स्वर मुखरित हुआ है कविता का उदाहरण दृष्टव्य है –

आजादी का पर्व आज फिर आओ कसमें खाएँ।
भारत के उत्थान प्रगति की गति न रूकने देंगे।
जाति धर्म भाषा में किंचित देश न बँटने देंगे।
इन्द्रधनुष से स्वप्न सभी के मन में आज खिलाएँ।[11]

बच्चों के हृदय में जोशीले भाव भरने के लिए रामनारायण त्रिपाठी पर्यटक की 'माँ ने हमें पुकारा है' कविता जीवन के समर में आगे बढ़ने, आपत्तियों और बाधाओं से न डरने की शिक्षा देती हैं। बच्चों में इस प्रकार के भाव भर जाते हैं तो बड़े होकर उन्हें अपने देश का गौरव कहलाने का श्रेय मिलता है –

मातृभूमि के स्वाभिमान ने आज हमें ललकारा है।
उठो देश के वीर बाँकुरों, माँ ने हमें पुकारा है।।
आज देश की सीमाओं पर, भीषण संकट छाया है।
है कश्मीर मुकुट माता का, नित संकट गहराता है।।
रोज सैकड़ों ललनाओं का, शील मिटाया जाता है।
कहो करे क्या खून खौलता, चलता शीश कुठारा है।।[12]

इसी प्रकार 'भारत जग सिरमौर बनाने' शीर्षक कविता में बच्चे देशवासियों से आग्रह करते हुए कहते हैं कि –

मातृभूमि का कण–कण हमको प्राणों से भी प्यारा है।
अपनी संस्कृति की रक्षा करना कर्तव्य हमारा है।।
राष्ट्र वाटिका में हमको अब वह 'प्रसून' सरसाना है।
भारत जग सिरमौर बनाने का संकल्प हमारा है।।[13]

---

2. पत्रिका 'बालवाटिका' – सं. भेरूलाल गर्ग, पृष्ठ 42, 43, जनवरी 2010
3. पत्रिका 'बालवाटिका' – सं. भेरूलाल गर्ग, पृष्ठ 43, फरवरी 2010
1. पत्रिका 'बालवाटिका' – सं. भेरूलाल गर्ग, पृष्ठ 44, 2009
2. काव्य संग्रह – राष्ट्रधर्म के गीत – रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक', पृष्ठ 11
3. काव्य संग्रह – राष्ट्रधर्म के गीत – रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक', पृष्ठ 10

विविधताओं से भरा हुआ हमारा देश विशेषताओं से परिपूर्ण है यह हमारा सौभाग्य है कि हमने इसमें जन्म लिया है 'भारत देश हमारा प्यारा' पंक्तियों में भारत को सौ स्वर्गों से भी ऊँचा बताया है –

सौ–सौ स्वर्गों से भी न्यारा,
भारत देश हमारा प्यारा।
आजादी अधिकार हमारा,
लोकमान्य का था यह नारा।
बने रहेंगे देश के रक्षक,
मानवता और धर्म संरक्षक।[14]

राष्ट्रीय चेतना की प्रेरणा से ही ऐसी महान नारियों के जीवन को कविता का विषय बनाया गया, जिनकी स्वतंत्रता में प्रमुख भूमिका थी। भारत की महान बेटियों का गुणगान करते हुए डॉ. रामवल्लभ आचार्य की निम्न पंक्तियों से बेटियों के मन में नई आशा और प्रेरणा का संचार किया –

हम बेटियाँ भारत की दुनिया की शान है,
हम इंदिरा उषा हम, हम कल्पना लता।
कमलावती, अहिल्या, हम झाँसी की रानी,
जौहर की हम है ज्वाला, गीता का ज्ञान है।[15]

'माँ मुझे तिरंगा ला दो' कविता में बालकों को संघर्ष का संदेश मिलता है। संघर्ष के समय केवल तिरंगा ध्वज थामने पर ही कितनों के प्राण गये थे। अंग्रेज तिरंगा देखते ही उग्र हो जाते थे, क्योंकि तिरंगा भारतीय स्वतंत्रता की लड़ाई का संबल था। कवि कहते हैं –

माँ मुझे तिरंगा ला दे,
मुझे देश का कर्ज चुकाना।
हम बच्च भविष्य भारत के,
रग–रग से फौलाद है।
देशभक्त मैं रहूँ सदा,
तू ऐसा दूध पिला दे।[16]

तिरंगे में निहित तीनों रंगों का विशेष महत्त्व है। केसरिया त्याग बलिदान, श्वेत सत्य व पवित्रता, हरा रंग देश की समृद्धि का प्रतीक है। 'लहराता तरल तिरंगा' की पंक्तियों में यह भाव दृष्टव्य है –

लाल किले पर लहर लहर,
लहराता तरल तिरंगा।
केसरिया रंग भर देता है शक्ति हमारे मन में,
श्वेत रंग विश्वास दिलाता, शांति सत्य के प्रण में।
हरा रंग कहता है अपनी हरी भरी है धरती,
भेदभाव को छोड़ सभी का पालन पोषण करती।[17]

'राष्ट्र तिलक' शीर्षक की पंक्तियों द्वारा बच्चों में बलिदान की भावना जगाते हुए देश के शहीदों को नमन करते हुए देश प्रेमी बनने की कामना प्रकट की है –

1. काव्य संग्रह – भारत देश हमारा प्यारा – रामावतार अनुरागी, पृष्ठ 5
2. काव्य संग्रह – अक्कड़–बक्कड़ हो हो हो – डॉ. अजय जनमेजय, पृष्ठ 45
3. काव्य संग्रह – माँ मुझे तिरंगा ला दे – सोमेश शर्मा, पष्ठ 9
1. काव्य संग्रह – मेरा देश महान है – श्रीमती शान्ति अग्रवाल, पृष्ठ 5

भारत के भाल पर विकास का तिलक,
हम करेंगे, हम करेंगे हम।
देश पर शहीद जो हुए उन्हें नमन,
भारत पर प्राण पुष्प कर गये अर्पण।[18]

सच्चा देशभक्त यही कामना करता है कि देश सदा खुशहाल रहें। देश की प्रगति हेतु वह सर्वस्व समर्पण हेतु तत्पर रहता हैं। उसकी चाह होती है कि जन्मजन्मान्तर तक उसे इसी मातृभूमि पर जन्म मिलता रहे –

हे वसुंधरे हे मातृभूमि,
तेरी सुख कलियाँ खिलती रहें।
हो जन्म कभी जब–जब मेरा,
तेरी ही गोदियाँ मिलती रहे।
तन मन धन तुझको अर्पित है,
यह जीवन तुझे समर्पित है।[19]

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा के पथ पर चलकर देश को आजाद कराया था। लेकिन आज का बच्चा इस बात को समझ नहीं पाता है वह बापू को इस प्रकार के सम्बोधन से पुकारता है –

बापू तुम्हें कहूं मैं बाबा या फिर बोलू नाना?
छड़ी हाथ में लेकर के तुम सदा साथ क्यों चलते?
टीचर कहते हैं तुमने भारत आजाद कराया।
एक छड़ी से तुमने क्या दुश्मन मार भगाया।[20]

महापुरूषों एवं राष्ट्रभक्तो के जीवन चरित्र ही बालकों के प्रेरणा स्त्रोत होते हैं। बच्चे महापुरूषों के आदर्शों को जानकर उन्हें अपने जीवन में ग्रहण कर सकते हैं। कवि की ये पंक्तियाँ बालकों के मन में चेतना जगाती हैं –

हम बच्चों के प्यारे चाचा,
आजादी की अलख जगाने।
घूमे द्वारे–द्वारे चाचा,
कभी न हिम्मत हारे चाचा।[21]

भावात्मक एकता हमारे देश की विशेषता है। अलग–अलग भाषा–भाषी, अलग–अलग धर्मों के अनुयायी होने के बावजूद हम एक है। हमारी यही एकता हमें राष्ट्रीय सूत्र से जोड़ती है। कवि ने भारत की वंदना इस प्रकार की है –

जहाँ देवों ने लक्षा है जनम गुंइयां,
भारत जैसो देश कहूँ नइयां।
वेशभूषा है भिन्न, बोलियाँ है अनेक,
भिन्नता में भी है, आत्मा सबकी एक।
प्रेम करूणा सिखाते धरम गुंइयां,
भारत जैसो देश कहूँ नइयां।[22]

अनेकता में एकता का गीत गाने वाला भारत देश गौरवशाली परम्पराओं का संवाहक रहा है इसलिए अनेक कवियों ने इसके प्राचीन आदर्शों का गुणगान किया है। देशप्रेम की भावना को जाग्रत करना न केवल अपनी जन्मभूमि को बचाना है

2. काव्य संग्रह – माँ मुझे तिरंगा ला दे – सोमेश शर्मा, पृष्ठ 20
3. काव्य संग्रह – माँ मुझे तिरंगा ला दें – सोमेश शर्मा, पृष्ठ 5
1. काव्य संग्रह – 151 बाल कविताएँ – सं. जाकिर अली रजनीश, पृष्ठ 234
2. काव्य संग्रह – हम है सुमन एक उपवन के – शशिकांत, पृष्ठ 35
3. काव्य संग्रह – अक्कड़–बक्कड़ – आचार्य भागवत दुबे, पृष्ठ 68

अपितु उन ऋणों को चुकाना भी है। हमें अपने देश पर गर्व है। उसकी रक्षा के लिए तन, मन, धन सर्वस्व न्योछावर करने तक के लिए मन में भावना और संकल्प होना चाहिए। 'साधना' कविता में यही आह्वान कवि राष्ट्रबंधु ने किया है –

तुम चलो देश आगे बढ़े,
ध्यान दो, देश ऊपर चढ़े।
वीरता से कसो तुम कमर,
तो परिश्रम का होगा असर।
देश कुर्बानियों से बना,
त्याग का नाम है साधना।[23]

देश प्रेम या राष्ट्र प्रेम भी राष्ट्रीय चेतना का प्रमुख अंग है। देश प्रेम द्वारा उत्पन्न राष्ट्रीय चेतना स्वयं परतंत्रता के विरूद्ध प्रेरणा बन जाती है। डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त की 'प्यारा हिन्दुस्तान' कविता इस प्रकार है –

हमारा प्यारा हिन्दुस्तान,
बनाओ इसको अमर महान्।
इसकी उन्नति सदा करें हम,
इसके हित ही जिये, मरे हम।
हर प्राणी ही शांत सुखी हो,
कोई किंचित नहीं दुःखी हो।
करो राष्ट्र सम्मान,
हमारा प्यारा हिन्दुस्तान।[24]

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं 21 वीं सदी की ये बाल कविताएँ बच्चों में राष्ट्रीय चेतना का संचार करती है। राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण आज के युग की प्रथम आवश्यकता है। बाल कविताएँ इस आवश्यकता पूर्ति की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हमारे अतीत का स्वर्णिम चित्र उपस्थित करते हुए वर्तमान को परखने और भविष्य को संवारने की प्रेरणा देती हैं।

1. काव्य संग्रह – साधना – डॉ. राष्ट्रबंधु, पृष्ठ 10
2. बालकाव्य सुधा – डॉ. रामेश्वर प्रसाद गुप्त, पृष्ठ 7